ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI:UPBIL04292,REG.No.:561/2013-14 Vol.-I, No.-1, PP-46-52, YEAR 2013

चितपुर औद्योगिक क्षेत्र (उ0प्र0 कोलकाता) का जनसंख्या संरचना

❑ डॉ0 अकालू प्रसाद चौरसिया

स्थिति एवं विस्तार– चितपुर (88° 21′ पू0 तथा 22° 52′उत्तर) तीन सौ वर्श पूर्ण किए हुए महानगर का एक अभिन्न अंग है। जो सांस्कृतिक, औद्योगिक, व्यापारिक प्रतिश्ठानों के लिये अति महत्वपूर्ण है। कोलकाता औद्योगिक क्षेत्र की सभी बड़ी औद्योगिक इकाईयाँ इसी क्षेत्र में अवस्थित हैं। इनके साथ ही व्यापारिक प्रतिश्ठान भी अवस्थित हैं। इनकी सुविधा हेतु बड़ी–बड़ी भण्डारण इकाईयाँ, सड़क एवं जल परिवहन सुविधायें उपलब्ध हैं जहाँ से कच्चा व तैयार माल मंगाया व भेजा जाता है। यहाँ के मालगोदामों की स्थिति प्रायः सुबह एवं भााम को देखने को मिलती हैं, जहाँ माल वाहक वाहनों का ताँता सा लगा रहता है तथा गोदाम यार्ड धूल–धूसरित एवं कोलाहल से गूँज उठता है, तथा आस–पास का वायुमण्डल कुहरा सा दिखाई देता है। यह भाग 1961 के पूर्व काफी विस्तार में फैला हुआ था। यहाँ की महानगर निगम संस्था ने अपनी सुविधानुसार इस भाग को मुख्यतः दो भागों–खगेन्द्र चटर्जी सड़क, का ीपुर सड़क एवं रूस्तमजी फारसी सड़क को मध्यवर्ती सीमा मानकर विभाजित किया। इस दक्षिण एवं प ि चमी भाग का नाम चितपुर पड़ा तथा भोश भाग को का ीपुर के नाम से जाना जाता है। सन् 1961 के पूर्व यह सभी भाग का ीपुर के अन्तर्गत ही था। यहाँ की सभी औद्योगि एवं व्यापारिक इकाईयाँ आज भी का ीपुर के नाम से जानी जाती हैं। चितपुर नामकरण के सन्दर्भ में यहाँ के वयावृद्ध एवं सम्मानित व्यक्तियों के द्वारा ज्ञात हुआ है कि इस क्षेत्र में पहले "चितू" नामक दबंग व्यक्ति रहता था, जो यहाँ स्थित सरमंगला मन्दिर में नर–बलि को समाप्त करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उसी "चितू" नमक व्यक्ति के आधार पर इस भाग का नाम चितपुर पड़ा।

यह भाग महानगर के उत्तर–प ि चम में हुगली नदी, जो उत्तर से दक्षिण दि ाा की ओर, प्रदूशित जल के साथ बहती है, के पूर्व किनारे पर एक विसर्पाकार अपनति की अवस्था में स्थित है। यह औद्योगिक क्षेत्र समुद्र तल से 5.30 मीटर ऊँचा तथा बंगाल की खाड़ी से 48 किमी0 की दूरी पर स्थित है। इसका उत्तर–दक्षिण विस्तार 2.50 किमी0 तथा पूरब–प ि चम 1.20 किमी0 की चौड़ाई के साथ 170 हेक्टेअर के क्षेत्रफल में स्थित है। इसकी लम्बाई एवं चौड़ई सर्वत्र समान नहीं है। अधिकतम् लम्बाई का ीपुर के साथ एवं चौड़ाई खगेन्द्र चटर्जी सड़क सहारे है तथा न्यूनतम् चौड़ाई रूस्तम जी फारसी सड़क इसकी उत्तरी सीमा निर्धारण करती है तथा दक्षिणी सीमा का निर्धारण पूरब से प्रदूशित जल के साथ प्रवाहित होता हुआ सर्कुलर कैनाल, जो खाल के नाम से जाना जाता है, हुगली में गिरता है।इसकी पूरबी सीमा बैरकपुर ट्रंक सड़क तथा का ीपुर सड़क तथा प ि चमी सीमा हुगली नदी द्वारा निर्धारित होती है। यह क्षेत्र 54867 (2011) की जनसंख्या के साथ 323 व्यक्ति प्रति हेक्टेअर, जो लगभग 9.85 हेक्टेअर पर विद्यमान है। सर्वेक्षण द्वारा स्पश्ट हुआ है कि औद्योगिक एवं व्यापारिक क्षेत्रों में काम करने वाले, खास तौर पर कर्मचारी वर्ग इसी प्रतिश्ठानों अथवा आस–पास के क्षेत्रों में निवास करते हैं। इसके अलावा रिक ाा चालक एवं अन्य छोटे व कम आय वाले व्यक्ति सड़क एवं गलियों में छोटी–छोटी झोपड़ी बनाकर निवास करते हैं। इस प्रकार यहाँ की विद्यमान जनसंख्या आँकलित जनसंख्या से लगभग 75 प्रति ात होने की सम्भावनायें बनी रहती है। इनक्षेत्रों में सर्वाधिक भूमि का प्रयोग औद्योगिक इकाईयों के अन्तर्गत किया जाता है, यहाँ कि सम्पूर्ण उपयोग का

Assistant Professor and Head, Department of Geography,
R.P.P.G. College, Kamalganj-Farrukhabad (U.P.) E-mail: dr.akaloo@gmail.com

ा लगभग 65 प्रति ात है। इसके अतिरिक्त मलिन बस्तियों, व्यापारिक प्रतिश्ठान, भण्डारण, सार्वजनिक स्थल यथा स्कूल, डाकघर, क्लब इत्यादि सम्मिलित है। ऐसे क्षेत्रों में खुले मैदान का अभाव होने से प्रदूशकों का भार में हमे ाा अभिवृद्धि होती रहती है। धार्मिक स्थलों यथा मन्दिर, म जद, कब्रिस्तान इत्यादि यथा स्थान विद्यामान होना स्वभाविक है चितपुर औद्योगिक क्षेत्र के पूरब एवं मध्य भाग से क्रम ाः अन्तर्राश्ट्रीय मार्ग संख्या–2 तथा का ीपुर सड़क, उत्तर में बैरकपुर व का ीपुर तथा दक्षिण में भयामबाजार एवं मध्य भाग से सम्बन्ध जोड़ती है। सड़क, उप सड़क एवं गलियाँ आन्तरिक भागों को मुख्य सड़कों से जोड़ती है, जिस पर भारी माल वाहक एवं सवारी वाहन पर्याप्त संख्या में चलते हैं। जिससे वायु एवं ध्वनि प्रदूशण वि ोश रूप से उत्पन्न होते हैं। इनके भू–उपयोग को मानचित्र में दिखया गया है।

धरातलीय स्वरूपः

धरातलीय स्वरूप के दृश्टि से यह भाग सामान्य ढाल के साथ समतल है। ढाल की स्थिति, दि ाा दि ाा की दृश्टि से पूरब से प चम की ओर क्रम ाः बढ़ता जाता है। कोलकाता (का ीपुर) नगर निगम के अनुसार का ीपुर सड़क मध्य थ उच्च स्तर पर है, जिसके प चम का ढाल, प चम की ओर (हुगली नदी की ओर) तथा पूर्व का ढाल पूर्व दि ाा की ओर है। इस पूर्वी भाग के सभी नाले पूरब में बैरकपुर ट्रंक सड़क के किनारे मुख्य नाते से मिलकर पूरब में "ढापा" की तरफ चला जाता है। जहाँ जल सिंचाई के काम में लिया जाता है। इस क्षेत्र के दक्षिण में स्थित सर्कुलर कैनाल जो खाल के नाम से जाना जाता है, पूरब से प चम की ओर प्रदूशित जल के साथ प्रवाहित होता हुआ हुगली नदी में गिरता है। यहाँ कंकड़युक्त बलुई मिट्टी पायी जाती है। वनस्पति की दृश्टि से यह भाग विरल है। नदी के किनारे जगह–जगह सघन वृक्ष एवं झाड़ियाँ पायी जाती हैं। मध्यवर्ती भागों में सड़कों के किनारे–किनारे एवं कुछ अन्तः औद्योगिक मैदानों में सामाजिक वानिकी हैं।

जलवायु एवं मौसम– यह सम्पूर्ण क्षेत्र विस्तृत रूप से मानसूनी जलवायु का एक भाग तथा समुद्र के नजदीक होने के कारण गर्म एवं आर्द्र है, यहाँ वर्श का सर्वाधिक गर्म महीना जून तथा ठण्डा महीना जनवरी है। ग्रीश्मकाल में उच्च तापमान के साथ–साथ आर्द्रता का भी प्रभाव बना रहता है। अलीपुर मौसम विभाग के 2013 के अभिलेखानुसार यहाँ का अधिकतम् तापमान ग्रीश्मकाल का 40.3° सेल्सियस तथा भारदकाल का 10.4° सेल्सियस औसत आँकालत किया गया है। औसत सापेक्षित आर्द्रता 74.97 प्रति ात है। सर्वाधिक वर्श का आर्द्र महीना अगस्त है। औसत वार्शिक वर्शा 4.76 सेंमी0मापी गयी है। यहाँ प्रायः दक्षिणी–पूर्वी हवायें चलता हैं। अप्रैल और मई महीने में भुश्कतायुक्त तीव्र हवायें एवं आँधी–तूफान पगायः आते रहते हैं। स्थानीय मौसम का विवरण निम्न तालिका में दिया गया है।

तलिका 1.1
मौसमी द ााएँ वर्ष 2013

महीना	तपमान (डिग्री सेल्सियस)			सापेक्षिक आर्द्रता (प्रति ात में)	औसत वर्शा (प्रति ात में)
	न्यूनतम्	अधिकतम्	औसत		
जनवरी	17.98	30.87	24.43	65.54	0.14
फरवरी	21.08	31.87	26.46	87.45	0.03
मार्च	23.43	35.87	29.65	64.56	––
अप्रैल	26.76	38.67	32.72	63.83	––
मई	29.98	37.89	33.94	70.87	0.66
जून	26.87	34.65	30.76	79.56	11.89
जुलाई	25.97	33.89	29.93	77.67	11.32
अगस्त	28.14	33.71	30.93	85.05	12.46
सितम्बर	28.18	34.10	31.14	84.71	12.89
अक्टूबर	25.77	32.57	29.17	77.52	5.67
नवम्बर	22.40	26.26	24.33	69.54	0.23
दिसम्बर	15.22	25.11	20.17	74.45	089
वार्शिक	24.32	32.96	27.78	74.97	55.87

स्रोतः मौसम विभाग, न्यू अलीपुर, कोलकाता।

ग्रिफ्फीथ टेलर के जलवायु प्रभावारेख के आधार पर प्रद ित यहाँ के जलवायु प्रभावारेख के आधार पर विवेचित किया जा सकता है कि यह क्षेत्र मानव स्वास्थ्य के अनुकूल स्वास्थप्रद नहीं है। क्योंकि यह क्षेत्र समुद्र के किनारे एवं कर्क रेखा पर स्थित है जिससे अधिक ताप एवंत र की स्थिति पायी जाती है। दूसरे यहाँ की हवाएँ जो प्रायः दक्षिण–पूर्व तथा उत्तर–पि चम से आती हैं। जो आन्तरिक भाग एवं पि चम में स्थित हुगली औद्योगिक पेटी एवं स्थानीय तापीय विद्युत उत्पादन केन्द्र से उत्सर्जित वायु प्रदूशकों को अपवाहन द्वारा यहाँ पर वायु प्रदूशण भार को बढ़ाने में सक्रिय होती है।

जनसंख्याः– संसाधनों की दृष्टि से मानव एक महत्व संसाधन का अर्थ तकनीकी विकास से लिया जाता है। यदि तकनीकी विकास उच्च स्तरीय है तो कोई किसी भी प्रकार की वस्तु को संसाधन के रूप में उपलब्ध एवं विकसित किया जा सकता है। जापान अपनी उच्च तकनीकी के आधार पर ही "संसाधन रहित होने पर भी विकसित दे ों की श्रेणी में गिना जाता है। जबकि भारत संसाधन युक्त होने पर भी तकनीकी के समुचित विकास न होने के कारण आज भी विकास ील की श्रेणी में बिना जाता है।" औद्योगिक क्षेत्रों के लिए जनसंख्या उतनी ही आव यक है जितना अन्य दूसरे संसाधन होते हैं। वेबर ने अपने औद्योगिक अवस्थिकरण सिद्धान्त में कहा है कि "उद्योग वहीं पर स्थापित करना उपयुक्त होता है जहाँ कि श्रमिक र्प्याप्त एवं सस्ते दर (कीमत) पर उपलब्ध हैं।" इस प्रकार उद्योग के साथ–साथ जनसंख्या में भी प्रसार होता रहता है। क्योंकि किसी भी एक कच्चे माल का अन्तिम उपयोग उसी कारखाने में नहीं होता है। प्रायः एक कारखाने का त्याज्यपदार्थ दूसरे कारखाने का कच्चा माल बन जाता है। जैसे चट कारखाने से निश्कासित कटा–फटा पदार्थ दूसरे कारखाने का कच्चा माल होता है, तथा प्लास्टिक कारखाने की भी यही द ा होती है। जिसमें श्रमिकों की संख्या अधिक होती है। इसके लिए जनसंख्या औद्योगिक एवं व्यापारिक इकाईयों में बाहर से आव्रजित होकर संख्या में वृद्धि कर जाती है। इसमें प्रायः ग्रामीण सीधे पलायित होते हैं, इसके अलावा नगरों/ ाहरों से भी इन इकाईयों की ओर उन्मुख होते हैं। क्योंकि यहाँ सेवा के लिए काफी अवसर मिलते रहते हैं।इस प्रकार इन क्षेत्रों में जनसंकुलता बढ़ जाती है।

सन् 2011 में यहाँ की कुल आबादी 53867 है जबकि 2001 में 46786, 1991 में 40273 तथा 1981 में 42626 इसका प्रमुख कारण आवासीय मकानों में लघु उद्योग एवं व्यापारिक इकाईयों की अवस्थापना है। जनघनत्व की दृष्टि से यहाँ 317 व्यक्ति प्रति हेक्टेअर जो सर्वत्र समान नहीं है। जनसंख्या का वितरण बहुत ही असमान है। कुछ भाग जनसंकुलता में हैं, जबकि कुछ जनविहीन। जनसंकुल वाले स्थान क्रमशः रेलवे क्वार्टर, घोश बागान, पाक पाड़ा, चिड़िया मोड़, चितपुर चौराहा, फारसी रोड तथा झील रोड आदि हैं। रेलवे क्वार्टर, गन ोल फैक्ट्री आवास तथा का ीपुर जेनरेटिंग स्टे ान क्वार्टर के अलावा सभी मलीन बस्तियाँ हैं। जगह–जगह पर झुग्गी झोपड़ी बनाकर निम्नतम् आय के लोग निवास करते हैं, इसमें काफी संख्या मेंरेलवे लाइन के किनारे निवास करते हैं। इनके मकान प्रायः ईंट सीमेण्टयुक्त दीवार तथा टाली (खपरैल) के छत हैं। इनमें कुछ दोमंजिले भी हैं। नाले सभी खुले हैं, गलियाँ कच्ची एवं अर्द्धपक्की हैं। यहाँ की कुल जनसंख्या की 57.67 प्रति ात (2011) आबादी साक्षर हैं।

जनसंख्या वृद्धि– सन् 1961 के पूर्व यह क्षेत्र का ीपुर के साथ था, किन्तु विभाजन (1961) के बाद यहाँ की जनसंख्या 24813 रह गयी। यह जनसंख्या सन् 1971 में 32757 हो गयी, जो सन् 1961 से 1971 के बीच 32.01 प्रति ात की वृद्धि हुई। यह जनसंख्या सन् 1981 में 42626 हुई, जो वृद्धि दर की उपनति से सन् 1971 की अपेक्षा 1.89 प्रति ात कम हो गयी। किन्तु सन् 2011 में यह आबादी, संख्या की दृष्टि से सन् 2001 से 8081 बढ़ हो गयी है।

तलिका 1.2
जनसंख्या वृद्धि

वर्ष	जनसंख्या			जनसंख्या वृद्धि
	कुल	पुरूष	महिला	
1961	24813	14202	10611	––
1971	32757	20861	11896	32.01
1981	42626	25949	16686	30.12
1991	40273	23127	17146	05.55
2001	46786	29227	17559	16.18
2011	54867	31127	22740	17.23

स्रोतः राष्ट्रीय सूचना केन्द्र, कोलकाता

जनघनत्व– जनघनत्व की दृष्टि से यह भाग काफी असमान है। जनभार सर्वत्र समान नहीं है। यहाँ कुछ ऐसे भाग हैं जहाँ का जनघनत्व अति सघन है, तथा कुछ भाग ऐसे भी हैं जहाँ जन विहीनता पायी जाती है। यह मुख्यतः औद्योगिक एवं व्यापारिक प्रतिश्ठानों के कारण है। चितपुर क्षेत्र का जनभार कार्य दिवसों में अधिक हो जाता है। जिसका प्रमुख कारण यहाँ स्थित बड़ी औद्योगिक इकाईयाँ हैं। जिनमें काम करने के लिए ग्रामीण अंचलों से लोग आते हैं, जो जल, रेल, सड़क परिवहनों का उपयोग करते हैं। इनके लिए कार्य दिवस में वि ोश प्रकार का किराया टिकट एवं वाहन उपलब्ध कराये गये हैं। यहाँ का जनघनत्व 2011 के आँकड़ों के अनुसार 323 व्यक्ति प्रति हेक्टेअर है। जबकि सर्वेक्षण के आधार पर पाया गया कि यह जनघनत्व 920 व्यक्ति प्रति हेक्टेअर है। जबकि सर्वेक्षण के आधार पर पाया गया कि यह जनघनत्व 920 व्यक्ति प्रति हेक्टेअर है। तालिका (1. 3) से स्पश्ट है कि यह घनत्व 2001 से कम है। जबकि क्रम ाः 1961 में 146 व्यक्ति प्रति हेक्टेअर तथा 1971 में 193 व्यक्ति प्रति हेक्टेअर था। अधिक जनघनत्व वाला भाग रेलवे क्वार्टर के दक्षिण तथा प्रण मुखर्जी सड़क के उत्तर, घोशबागान लेन, दक्षिणी लालगेट सड़क, चितपं चौराहा, चिड़िया मोड़, झील रोड आदि हैं। इनके अलावा पाकेट रूप में जहाँ–तहाँ अधिक जनघनत्व पाया जाता है। सर्वाधिक विरल भाग हुगली नदी के किनारे है। जहाँ पर मुख्यतः रिक ाा चालक, प्लाष्टिक एवं भाी ाा–काँच इकट्ठा करने वाले झोपड़ी बनाकर रहते हैं।

तालिका 1.3
चितपुर औद्योगिक क्षेत्र का जनघनत्व वर्ष 2011

वर्ष	जनघनत्व (व्यक्ति प्रति हेक्टेअर)
1961	146
1971	193
1981	151
1991	237
2001	276
2011	323

स्रोतः राष्ट्रीय सूचना केन्द्र, कोलकाता

चितपुर के जनघनत्व को मानचित्र–5 में द ार्शाया गया है जिसके अनुसार सबसे घना–बसा क्षेत्र घोश बगान लेन, चिड़िया मोड, दक्षिणी–पूर्वी एवं उत्तरी–प चिमी भाग हैं इनमें छिट–पुट बसे निम्नतम् आय वालों के झुग्गी झोपड़ी में रहने वालों को द ार्शाने का प्रयास किया गया है। जनसंख्या एवं जनवृद्धि को चित्र संख्या 6 में दिखया गया है, जिससे स्पश्ट होता है कि जनसंख्या एवं जनसंख्या वृद्धि में सामान्य स्वरूप है जिसका मुख्य कारण उद्योगों एवं व्यापारिक इकाईयों का सामान्य प्रतिस्थापन है। जो सर्वेक्षण एवं आवासीय मकानों के अभिलेख (2011) द्वारा ज्ञात हुआ है।

जनसंख्या वृद्धि की उपनतियों तथा प चिम बंगाल सरकार की महानगरीय योजनाओं के आधार पर स्पश्ट होता है कि दिनोत्तर जनघनत्व में सामान्य वृद्धि हो रही है। सितम्बर 1994 में प चिम बंगाल सरकार ने सभी प ुपालकों (व्यवसायी वर्ग) निर्दे ा दिया था कि ये अपने खटाल (प ुओं सहित) महानगर के दूरस्थ भागों को पलायित कर जायें। इनमें अधिकां ा पलायित भी हो गये हैं। इसी प्रकार झोपड़ी एवं अतिक्रमण पर भी यह सरकार/संस्था प्रतिबन्ध लगा रही है। सर्वेक्षण से ज्ञातव्य है कि अधिकां ा आवासीय मकान उद्योग एवं व्यापारिक प्रतिश्ठान में परिवर्तित हो गये हैं। कुछ ऐसे भी मकान हैं, आवास तथा व्यापार व आवास, उद्योग एवं व्यापार भी होते हैं। जो जनभार को प्रोत्साहन देते हैं। यह मात्र अवका ा के दिनों में ही सुनसान दिखाई पड़ता है। जबकि कार्य दिवस में जनघनत्व इतना अधिक बढ़ जाता है कि वायुमण्डल ध्वनि से गूँज उठता है तथा वाहनों से वायुमण्डल धूल–धूसरित रहता है एवं सायं काल आका ा में कुहरा सा दिखाई देता है।

साक्षरता–विकास की दृष्टि से मनुष्य सामाजिक तत्व के अलावा एक महत्वपूर्ण संसाधन है। जनसंख्या संसाधन से तात्पर्य उच्च तकनीकी एवं ि ाक्षा है अपना एवं समाज का उत्थान एवं विकास के योगदान कर सकें। जहाँ भी उच्च एवं कु ाल तकनीकी होगी वहाँ का सामाजिक एवं आर्थिक स्तर ऊँचा होगा। चीन व भारत, वि व के सर्वाधिक जनसंख्या एवं प्राकृतिक संसाधन वाले राश्ट्र हैं जबकि जापान इससे विमुक्त ही कहा जा सकता है। लेकिन उच्च तकनीकी एवं ि ाक्षा के आधार पर आज इो वि व का सूरज कहा जाता है।

चितपुर एक औद्योगिक एवं व्यापारिक क्षेत्र है, जहाँ पर साक्षरता का होना नितान्त आव यक है। आज–कल सरकारी में सिर्फ उन्हीं को साक्षर घोशित किया जा रहा है, जिनके पास प्रमाण पत्र है। लेकिन साक्षरता का अभ्युदय एक दूसरे के सह सम्बन्ध एवं सामंजस्य से भी होता है। इस प्रकार से साक्षरता स्तर भात प्रति ात हो जाती है। अभिलेखों के आधार पर तालिका 1.4 से स्पश्ट होता है कि वर्तमान साक्षरता स्तर सन् 1961 के समकक्ष है। जो 1971 में घटकर 41.40 प्रति ात रह गयी। इसके घब्ने का मुख्य कारण 1961 का का ीपुर का विभाजन था। यह स्तर 1971 के बाद से क्रम ाः बढ़ने लगा जो 1981 में 53.72 प्रति ात,1991 में 57.08 प्रति ात, 2001 में 59.07 तथा 2011 में 63.56 प्रति ात हो गया। यहाँ स्त्रियों की साक्षरता पुरूशों की अपेक्षा कम है। यह 1971 में 03.64 प्रति ात था जो क्रम ाः सन् 1981 में 23.96, 1991 में 19.42, 2001 में 21.06 तथा 2011 में यह प्रति ात 24.53 हो गया। यहाँ ि ाक्षा में अध्ययनरत अधिकां ा प्रणमुखर्जी सड़क एवं रेलवे क्वार्टर के मध्य आवासीय बच्चों की संख्या है। इसके अलावा अन्य भागों ऐसे बच्चे हैं, जो ि ाक्षार्जन के बाद आय सम्बन्धी व्यवसायों की तरफ आकृष्ट हो जाते हैं तथा ि ाक्षा से विमुख हो जाते हैं।

तालिका 1.4
चितपुर औद्योगिक क्षेत्र का साक्षरता वर्ष 2011

वर्श	साक्षरता (प्रति ात में)	पुरूश (प्रति ात में)	स्त्रियाँ (प्रति ात में)
1961	64.95	41.31	23.65
1971	41.40	37.76	03.64
1981	53.72	29.76	23.96
1991	57.08	37.66	19.42
2001	59.07	38.01	21.07
2011	63.56	39.03	24.53

स्रोतः राष्ट्रीय सूचना केन्द्र, कोलकाता।

व्यवसायिक संरचना– वक्तिका मूलभूत आव यकता जीविकोपार्जन एवं विकास है। जिसके लिए वह किसी न किसी व्यवसाय की खोज में लगा रहता है। हलाँकि हमारे दे ा में स्वतः व्यवसाय की अपेक्षा सरकारी अथवा गैर सरकारी नौकरियों के प्रति लोगों का रूझान अधिक है।यह प्रवृत्ति विकास के लिए अच्छा सूचक नहीं मानी जा सकती है। हलाँकि बेरोजगारी की बढ़ती समस्या को देखते हुए अब सरकारी स्तर पर भी लोगों को स्वरोजगारी की तरफ की तरफ मोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। इस सन्दर्भ में जापान के अति लघु समय में विकास के चरम स्तर तक पहुँचने का उदाहरण दिया जा सकता है। वहाँ जनसंख्या का प्रत्येक वर्ग किसी न किसी स्वरोजगार के द्वारा बेरोजकारी की समस्या से उभरकर एक अच्छा उदाहरण पे ा कर सका है।

भारत जैसे दे ा में प्रायः 16–18 वर्श के बाद व्यवसाय में लगने योग्य माने जाते हैं तथा नौकरियों की खोज में तथा सवराज की समुचित व्यवस्था के अभाव में किसी छोटी–मोटी नौकरी के द्वारा जीवनयापन में लग जाते हैं। चितपुर औद्योगिक–व्यापारिक क्षेत्र होने के कारण भी वयवसायियों की संख्या आनुपातिक कम है। यहाँ सम्पूर्ण जनसंख्या का 35.85 प्रति ात (2011) लोग मुख्य कार्यकर्ता के रूप में हैं।जिनमें पुरूशों (31.63 प्रति ात) की संख्या स्त्रियों (02.39 प्रति ात) की संख्या से बहुत अधिक है। जबकि विगत द ाकों से यह प्रतिशत बहुत कम है। तालिका संख्या 1.5 से स्पष्ट होता है कि सन् 1961 में मुख्य कार्यकर्ताओं की संख्या 34.66 प्रति ात था जबकि यह प्रति ात सन् 1971 में बढ़कर 38.82 प्रति ात हो गया। लेकिन सन् 1981 में यह प्रति ात घटकर 33. 70 प्रति ात हो गया। यह स्थिति मुख्यतः आवास छोड़कर दूसरे स्थानों पर पलायित होने की है। जहाँ से ये पलायित हुए हैं वहाँ पर उद्योग या व्यापारिक प्रतिश्ठान प्रतिस्थापित किये कये हैं।

तालिका 1.5
चितपुर औद्योगिक क्षेत्र का व्यावसायिक संरचना वर्ष 2011

व्यवसाय	1961 (प्रति ात)	1971 (प्रति ात)	1981 (प्रति ात)	1991 (प्रति ात)	2001 (प्रति ात)	2011 (प्रति ात)
मुख्य कार्यकर्ता	34.66	38.42	38.82	30.89	33.67	34.87
कृशक	––	––	––	––	––	––
किसान	––	––	00.04	00.36	00.89	01.21
वन,मत्स्य,खादान	00.09	00.48	––	00.07	00.78	00.89
िल्पकार–गृह	00'41	00.41	00.30	00.06	00.56	00.84
िल्पकार–अन्य	10.08	15.48	––	09.57	11.76	12.35
निर्माण सम्बन्धी	00.60	00.77	––	00.76	00.98	01.12
व्यापार	08.91	08.16	33.35	08.49	14.88	15.98
परिवहन	03.11	07.41	––	06.40	08.87	09.89
अन्य सेवा	11.42	05.92	––	05.15	10.78	11.56
सीमान्त	––	––	00.42	0.23	01.98	02.08
कार्यविहीन	30.73	38.28	27.07	38.02	14.85	09.21

स्रोतः राष्ट्रीय सूचना केन्द्र, कोलकाता।

इस प्रकार चितपुर औद्योगिक क्षेत्र जो उत्तर–पि चम कोलकाता महानगर का एक प्रमुख भाग है। इस क्षेत्र में भारत एवं पड़ोसी बांगला दे ा के विविन्न राज्यों/क्षेत्रों से विविध संरचना वाले लोग आकर कारखानों में कार्य करते हैं तथा समीपस्थ क्षेत्रों में स्थाई एवं अस्थाई रूप से निवास करते हैं। इससे इस भाग का स्थाई एवं अस्थाई रूप से जन दबाव/जनघनत्व में परिवर्तन होता रहता है। जिसका सीधा प्रभाव/सम्बन्ध पर्यावरण से होता है। जिसके समाधान हेतु स्थानीय एवं राष्ट्रीय स्तर की इकाईयाँ सक्रिय हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

1–भारत का भूगोल, चतुर्भुज ममोरिया।

2–भारत का भूगोल, माजिद हुसैन।

3–भारत का भूगोल, अलका गौतम एवं वी0 एस0 चौहान।

4–भारत का प्रादे ि क भूगोल, प्रो0 आर0 एल0 सिंह।

5–जनसंख्या भूगोल, डॉ0 हीरा लाल, (1997), वसुन्धरा प्रका ान, गोरखपुर।

6–Agrawal, S.N., "some problems of India's population, Bombay, Versa Press, 1966.

7– इंटरनेट सेवा।

*****